

संपूर्ण गणेश अथर्वशीर्ष पाठ हिंदी |

Ganesh Atharvashirsha Path In Hindi

'श्री गणेशाय नमः'

श्लोक 1 – शांतिपाठ (प्रथम)

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः।
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः॥
स्थिरैः रंगैः स्तुष्टुवांसहस्तनुभिः।
व्यशेम देवहितं यदायुः॥१॥

हिंदी अर्थ

हे देवताओं! हम अपने कानों से सदा कल्याणकारी बातें ही सुनें। हे यज्ञ-योग्य देवों! हम अपनी आँखों से सदा शुभ और मंगलकारी दृश्य ही देखें। स्थिर और स्वस्थ अंगों तथा शरीर से हम आपकी स्तुति करते हुए, देवताओं द्वारा निर्धारित आयु को सुखपूर्वक व्यतीत करें।

भावार्थ: यह शांतिपाठ हमारी इंद्रियों कान, आँख और शरीर को शुभता की ओर उन्मुख करने की प्रार्थना है। जीवन में जो कुछ भी ग्रहण करें सुनें, देखें, करें वह सब कल्याणकारी हो।

श्लोक 2 – शांतिपाठ (द्वितीय)

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः।
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः॥
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥२॥
ॐ शांतिः। शांतिः॥ शांतिः॥॥

हिंदी अर्थ

महान यश वाले इंद्र हमारा कल्याण करें। समस्त ज्ञान के स्वामी पूषा देव हमारा कल्याण करें। बाधाओं को नष्ट करने वाले गरुड़ (तार्क्ष्य) हमारा कल्याण करें। देवगुरु बृहस्पति हमें कल्याण प्रदान करें। शरीर, मन और आत्मा तीनों स्तरों पर शांति हो।

भावार्थ: इस श्लोक में सभी प्रमुख देवशक्तियों से जीवन में स्वस्ति (कल्याण) की प्रार्थना की गई है। तीन बार 'शांतिः' का उच्चारण आधि (मानसिक), व्याधि (शारीरिक) और उपाधि (दैविक) तीनों तापों की शांति के लिए है।

श्लोक 3 – गणपति वंदना एवं रक्षा प्रार्थना

ॐ नमस्ते गणपतये।
 त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि॥
 त्वमेव केवलं कर्त्ताऽसि।
 त्वमेव केवलं धर्त्तासि॥
 त्वमेव केवलं हर्त्ताऽसि।
 त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि॥
 त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्।
 ऋतं वच्मि॥ सत्यं वच्मि॥
 अव त्वं माम्॥ अव वक्तारम्॥
 अव श्रोतारम्॥ अव दातारम्॥
 अव धातारम् अवानूचानमव शिष्यम्॥
 अव पश्चातात्॥ अव पुरस्तात्॥
 अवोत्तरातात्॥ अव दक्षिणात्तात्॥
 अव चोर्ध्वात्तात्॥ अवाधरात्तात्॥
 सर्वतो मां पाहि पाहि समंतात्॥३॥

हिंदी अर्थ

हे गणपति! आपको प्रणाम है। आप ही साक्षात् परम तत्त्व हैं जिसे उपनिषद् "तत्त्वमसि" (वह ब्रह्म तुम ही हो) कहते हैं। आप ही इस सृष्टि के एकमात्र रचयिता हैं। आप ही इसे धारण करते हैं। आप ही इसका संहार करते हैं। यह समस्त जगत वास्तव में आप ही हैं आप ही परब्रह्म हैं। आप सदा प्रत्येक प्राणी के भीतर आत्मा के रूप में विराजमान हैं।

मैं ऋत (वैदिक सत्य) का उच्चारण करता हूँ। मैं सत्य बोलता हूँ। हे भगवान! मेरी रक्षा करें इस पाठ के वक्ता की रक्षा करें, श्रोता की, दाता की, धारण करने वाले की, आचार्य की, और शिष्य की भी रक्षा करें। पीछे से, आगे से, उत्तर से, दक्षिण से, ऊपर से, नीचे से सभी दिशाओं से मेरी रक्षा करें।

भावार्थ: यह श्लोक **Ganesh Atharvashirsha** का हृदय है। इसमें गणेश जी को ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों के एकत्व के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। साथ ही, छः दिशाओं से सर्वदिशा-सुरक्षा की प्रार्थना की गई है।

श्लोक 4 – गणेश का ब्रह्म स्वरूप

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः।
 त्वमानंदमयस्त्वं ब्रह्ममयः॥
 त्वं सच्चिदानंदाद्वितीयोऽसि।
 त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
 त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि॥४॥

हिंदी अर्थ

हे गणेश! आप वाणी के सार हैं, आप चेतना से परिपूर्ण हैं। आप ही आनंदमय हैं और आप ही ब्रह्मस्वरूप हैं। आप सच्चिदानंद के अद्वितीय स्वरूप हैं अर्थात् आप ही सत्य हैं, आप ही चेतना हैं, और आप ही परम आनंद हैं। आपके समान या आपसे भिन्न कोई दूसरा नहीं है। आप प्रत्यक्ष परब्रह्म हैं। आप ज्ञान और विज्ञान दोनों के स्वामी हैं।

भावार्थ: इस श्लोक में **Ganapati Atharvashirsha** का सबसे गहरा दर्शन है। गणेश जी को वेदांत के परम सत्य "सच्चिदानंद" के रूप में स्थापित किया गया है। वे केवल एक देवता नहीं, बल्कि स्वयं परब्रह्म हैं।

श्लोक 5 – सृष्टि और पंचतत्त्व

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते।
सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति।
सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति।।
सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति।।
त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः।।
त्वं चत्वारि वाक्पदानि।।५।।

हिंदी अर्थ

यह समस्त जगत आपसे ही उत्पन्न होता है। यह समस्त जगत आप में ही स्थित है। यह समस्त जगत अंत में आप में ही लीन हो जाएगा। यह समस्त जगत आप में ही वापस लौटता है। आप ही पृथ्वी हैं, आप ही जल हैं, आप ही अग्नि हैं, आप ही वायु हैं, और आप ही आकाश हैं। आप ही वाणी के चारों रूप परा, पश्यंती, मध्यमा और वैखरी हैं।

भावार्थ: यह श्लोक वेदांत के सिद्धांत को प्रतिपादित करता है कि सृष्टि, स्थिति और प्रलय तीनों में गणेश ही हैं। पंचमहाभूत (पाँचों तत्त्व) भी वे ही हैं। गणेश ही इस समस्त सृष्टि के आदि और अंत हैं।

श्लोक 6 – गणेश की सर्वातीत और सर्वव्यापी सत्ता

त्वं गुणत्रयातीतः त्वमवस्थात्रयातीतः।
त्वं देहत्रयातीतः त्वं कालत्रयातीतः।
त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्।
त्वं शक्तित्रयात्मकः।।
त्वां योगिनो ध्यायंति नित्यम्।
त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वं इन्द्रस्त्वं अग्निस्त्वं।
वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चंद्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।।६।।

हिंदी अर्थ

आप तीनों गुणों (सत्त्व, रज, तम) से परे हैं। आप तीनों अवस्थाओं (जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति) से परे हैं। आप तीनों देहों (स्थूल, सूक्ष्म, कारण) से परे हैं। आप तीनों कालों (भूत, वर्तमान, भविष्य) से परे हैं। आप

मूलाधार चक्र में सदा निवास करते हैं। आप तीनों शक्तियों (इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति) के आत्मस्वरूप हैं। योगीजन आपका नित्य ध्यान करते हैं।

आप ही ब्रह्मा हैं, आप ही विष्णु हैं, आप ही रुद्र हैं, आप ही इंद्र हैं, आप ही अग्नि हैं, आप ही वायु हैं, आप ही सूर्य हैं, आप ही चंद्रमा हैं। आप ही भूलोक, भुवर्लोक और स्वर्लोक सहित समस्त ब्रह्मांड के प्रणव (ॐ) स्वरूप हैं।

भावार्थ: यह **Ganesh Atharvashirsha** का सबसे विस्तृत और भव्य श्लोक है। इसमें गणेश जी को समस्त देवताओं, समस्त लोकों और समस्त तत्त्वों का एकत्व बताया गया है। वे सबसे परे भी हैं और सब में व्याप्त भी हैं।

श्लोक 7 – गणेश मंत्र और गणेश विद्या

गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनंतरम् ॥
अनुस्वारः परतरः ॥ अर्धेन्दुलसितम् ॥
तारेण ऋद्धम् ॥ एतत्तव मनुस्वरूपम् ॥
गकारः पूर्वरूपम् अकारो मध्यरूपम् ॥
अनुस्वारश्चान्तरूपम् ॥ बिन्दुरुत्तररूपम् ॥
नादः संधानम् ॥ संहिता संधिः ॥
सैषा गणेश विद्या ॥
गणक ऋषिः ॥ निचृद्गायत्री छंदः ॥
गणपति देवता ॥
ॐ गं गणपतये नमः ॥७॥

हिंदी अर्थ

पहले 'ग' (गण का आदि अक्षर) का उच्चारण करें, फिर 'अ' (वर्णमाला के प्रथम अक्षर) का, उसके बाद अनुस्वार (ं), फिर अर्धचंद्र बिंदु से युक्त करें, और ॐ (तारा — प्रणव) से परिपूर्ण करें यही आपके मंत्र का स्वरूप है।

'ग' पूर्वरूप है, 'अ' मध्यरूप है, अनुस्वार अन्तरूप है, बिंदु उत्तर (परे) का रूप है, और नाद इन सबका संधान है। इस प्रकार यह "गणेश विद्या" है। इसके ऋषि गणक हैं, छंद निचृद्गायत्री है, और देवता गणपति हैं।

ॐ गं गणपतये नमः — इस मंत्र से गणपति की वंदना है।

भावार्थ: यह श्लोक **Ganpati Atharvashirsha** के बीज मंत्र "ॐ गं" की व्याख्या करता है। 'ग + अ + अनुस्वार = गं' — यह मंत्र की ध्वनि और उसका आध्यात्मिक रहस्य बताता है। यह गणेश विद्या का मूल आधार है।

श्लोक 8 – गणेश गायत्री और ध्यान स्वरूप

एकदंताय विद्महे। वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दंती प्रचोदयात्।।
एकदंतं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारिणम्।।
रदं च वरदं च हस्तैर्विभ्राणं मूषकध्वजम्।।
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।।
रक्तगंधानुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।।८।।

हिंदी अर्थ

गणेश गायत्री मंत्र: हम एकदंत (एक दाँत वाले गणेश) को जानते हैं, वक्रतुण्ड (टेढ़ी सूँड वाले) का हम ध्यान करते हैं वे एकदंत हमें प्रेरित और प्रकाशित करें।

ध्यान स्वरूप: एक दाँत वाले, चार भुजाओं से युक्त, हाथों में पाश और अंकुश धारण किए हुए, एक हाथ में रद (टूटा दाँत) और दूसरे हाथ से वर (आशीर्वाद) देते हुए, मूषक (चूहे) को ध्वज पर धारण किए हुए, लाल वर्ण के, लंबे उदर (पेट) वाले, सूप जैसे बड़े कानों वाले, लाल वस्त्र पहने हुए, लाल चंदन से अनुलिप्त अंगों वाले, और लाल पुष्पों से सुपूजित ऐसे गणेश जी का ध्यान करें।

भावार्थ: यह श्लोक गणेश जी के सगुण साकार स्वरूप का दिव्य और पूर्ण वर्णन है। प्रत्येक अंग का प्रतीकात्मक अर्थ है पाश (संसार में बंधन), अंकुश (मन पर नियंत्रण), वरदमुद्रा (भक्तों पर कृपा), और मूषकवाहन (विनम्रता से विशाल लक्ष्य प्राप्त करना)।

श्लोक 9 – गणेश का जगत्कारण स्वरूप और योगी-स्तुति

भक्तानुकंपिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात् परम्।।
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः।।९।।

हिंदी अर्थ

भक्तों पर कृपा करने वाले, इस जगत के कारणस्वरूप, और कभी न डिगने वाले (अच्युत) देव गणेश, सृष्टि के आरंभ में प्रकृति और पुरुष से भी परे प्रकट हुए। जो व्यक्ति नित्य इस प्रकार (ऊपर वर्णित स्वरूप का) ध्यान करता है, वह समस्त योगियों में श्रेष्ठ योगी है।

भावार्थ: यह श्लोक घोषित करता है कि गणेश जी सांख्य दर्शन की प्रकृति और पुरुष दोनों से परे हैं। वे सृष्टि के आदि में स्वयंप्रकट हुए। ऐसे गणेश का नित्य ध्यान करने वाला ही सच्चा योगी है।

श्लोक 10 – गणेश नमस्कार

नमो व्रातपतये। नमो गणपतये।।
नमः प्रमथपतये।।
नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदंताय।
विघ्ननाशिने शिवसुताय।।
श्री वरदमूर्तये नमो नमः।।१०।।

हिंदी अर्थ

व्रात (समूह) के स्वामी को नमस्कार। गणों के अधिपति गणपति को नमस्कार। प्रमथगणों के स्वामी को नमस्कार। लम्बोदर (बड़े पेट वाले), एकदंत (एक दाँत वाले), विघ्नों का नाश करने वाले, शिवनंदन (शिव के पुत्र), और वरदान देने वाले श्री गणेश की मूर्ति को बारम्बार नमस्कार है।

भावार्थ: यह श्लोक **Ganpati Atharvashirsha Lyrics** में गणेश जी के विविध नामों और गुणों के माध्यम से उनकी वंदना करता है। प्रत्येक नाम उनके एक विशेष स्वरूप और शक्ति को इंगित करता है।

श्लोक 11 – अथर्वशीर्ष पाठ का फल

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते।। सः ब्रह्मभूयाय कल्पते।।
स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते।
स सर्वतः सुखमेधते।।११।।

हिंदी अर्थ

जो इस **Atharvashirsha** का अध्ययन और पाठ करता है, वह ब्रह्मत्व (परब्रह्म की प्राप्ति) के योग्य हो जाता है। उसे कोई भी विघ्न बाधित नहीं कर सकता। वह सभी प्रकार से सुख और उन्नति को प्राप्त करता है।

भावार्थ: यहाँ से **Ganesh Atharvashirsha In Hindi** के पाठ का फल बताना प्रारंभ होता है। यह श्लोक पाठकर्ता को आश्वासन देता है कि इस पवित्र स्तोत्र के पाठ से जीवन में विघ्न नहीं आते और आत्मिक उन्नति होती है।

श्लोक 12 – पाठ के समय और पाप-नाश का फल

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति।।
प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति।।
सायं प्रातः प्रयुंजानो पापोऽभवति।
सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति।।
धर्मार्थकाममोक्षं च विंदति।।१२।।

हिंदी अर्थ

जो सायंकाल इस **Atharvashirsha Path** का पाठ करता है, वह दिन में किए गए पापों से मुक्त हो जाता है। जो प्रातःकाल पाठ करता है, वह रात्रि में हुए पापों से मुक्त हो जाता है। जो सायं और प्रातः दोनों समय पाठ करता है, वह पाप से रहित हो जाता है। जो सर्वत्र (सदा) इसका पाठ करता है, वह सभी विघ्नों से मुक्त हो जाता है। और वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों को प्राप्त कर लेता है।

भावार्थ: यह श्लोक **Ganesh Atharvashirsha Path** के नियमित पाठ की विधि और उसके अद्भुत फलों का वर्णन करता है। चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति का आश्वासन इस स्तोत्र की महिमा को सर्वोच्च स्थान देता है।

श्लोक 13 – अथर्वशीर्ष की गोपनीयता और सहस्र पाठ का फल

इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम् ।।
यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति ।।
सहस्रावर्तनात् यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत् ।।१३।।

हिंदी अर्थ

यह Atharvashirsha अपात्र (अशिष्य, अश्रद्धालु) को नहीं देना चाहिए। जो व्यक्ति मोह या लालच में आकर इसे अपात्र को देता है, वह पापी बन जाता है। इस Ganesh Atharvashirsha का एक हजार बार (सहस्र) पाठ करने से साधक जिस-जिस इच्छा को लेकर पाठ करता है, वह-वह इच्छा पूर्ण हो जाती है।

भावार्थ: यह श्लोक इस विद्या की पवित्रता और गोपनीयता पर बल देता है। जिस प्रकार दुर्लभ रत्न की रक्षा की जाती है, उसी प्रकार यह दिव्य विद्या भी केवल योग्य, श्रद्धावान साधक को ही दी जानी चाहिए। सहस्र पाठ का फल मनोकामना-सिद्धि है।

श्लोक 14 – अभिषेक और विद्याप्राप्ति का फल

अनेन गणपतिमभिषिंचति स वाग्मी भवति ।।
चतुर्थ्यामनश्रन् जपति स विद्यावान् भवति ।।
इत्यथर्वणवाक्यम् ।। ब्रह्माद्यावरणं विद्यात् ।।
न विभेती कदाचनेति ।।१४।।

हिंदी अर्थ

जो व्यक्ति इस Ganesh Atharvashirsha से गणपति का अभिषेक करता है, वह वाक्पटु (वाग्मी) अर्थात् बोलने में अत्यंत कुशल हो जाता है। जो व्यक्ति चतुर्थी तिथि को उपवास रखकर इसका जप करता है, वह विद्यावान (ज्ञानी) हो जाता है। यह अथर्ववेद का वचन है। जो ब्रह्म से लेकर समस्त देवताओं के आवरण (रहस्य) को जान लेता है, वह कभी भयभीत नहीं होता।

भावार्थ: Ganpati Atharvashirsha का पाठ केवल मंत्र-जप तक सीमित नहीं है। अभिषेक और उपवास के साथ किए गए पाठ के विशिष्ट फल हैं वाक्शक्ति और दिव्य ज्ञान। यह साधक को निर्भय बना देता है।

श्लोक 15 – पूजा-सामग्री और उनके विशेष फल

यो दूर्वाकुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति ।।
यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति ।। स मेधावान् भवति ।।
यो मोदकसहस्रेण यजति ।।
स वाञ्छितफलमवाप्नोति ।।
यः साज्यसमिद्धिर्यजति स सर्वं लभते । स सर्वं लभते ।।१५।।

हिंदी अर्थ

जो दूर्वा (दूब घास) के अंकुरों से गणेश जी की पूजा करता है, वह कुबेर (वैश्रवण) के समान धनवान हो जाता है। जो लाजा (खील/धान की लावा) से पूजा करता है, वह यशस्वी और मेधावी (तीव्र बुद्धि वाला) हो

जाता है। जो एक हजार मोदकों से यजन करता है, वह अपनी मनचाही इच्छा प्राप्त कर लेता है। जो घी से सिक्त समिधाओं (लकड़ी) से हवन करता है, वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है सब कुछ प्राप्त कर लेता है।

भावार्थ: यह श्लोक **Ganesh Atharvashirsha Path** में विभिन्न पूजा-सामग्रियों के महत्व और उनके फल बताता है। 'सर्व लभते' को दो बार दोहराना उस फल की निश्चितता पर जोर देता है।

श्लोक 16 – अंतिम फल और उपनिषद-समाप्ति

अष्टो ब्राह्मणान् सम्यग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति ॥
सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमंत्रो भवति ॥
महाविघ्नात् प्रमुच्यते ॥ महादोषात् प्रमुच्यते ॥
महापापात् प्रमुच्यते ॥
स सर्वविद्भवति । स सर्वविद्भवति ।
य एवं वेद ॥ इत्युपनिषद् ॥ १६ ॥
॥ अथर्ववेदिय गणपत्युपनिषदं समाप्तः ॥

हिंदी अर्थ

जो आठ ब्राह्मणों को इस **Atharvashirsha** का सम्यक् (विधिपूर्वक) श्रवण कराता है, वह सूर्य के समान तेजस्वी हो जाता है। जो सूर्यग्रहण के समय, किसी महानदी के तट पर, अथवा गणेश प्रतिमा के समीप इसका जप करता है, वह सिद्धमंत्र हो जाता है अर्थात् उसके मंत्र सिद्ध हो जाते हैं।

वह महाविघ्न से मुक्त हो जाता है। वह महादोष से मुक्त हो जाता है। वह महापाप से मुक्त हो जाता है। वह सर्वज्ञ हो जाता है वह सर्वज्ञ हो जाता है। जो इसे इस प्रकार जानता है यह उपनिषद है।

अथर्ववेद के गणपत्युपनिषद (Ganesh Atharvashirsha) की समाप्ति।

भावार्थ: यह अंतिम श्लोक **Ganesh Atharvashirsha Path In Hindi** के पाठ का सर्वोच्च फल घोषित करता है। तीन 'महा' (महाविघ्न, महादोष, महापाप) से मुक्ति और सर्वज्ञता की प्राप्ति यह इस उपनिषद का अंतिम और सर्वश्रेष्ठ वरदान है।